हिंदी फिल्म संगीत से चुनी गई कुछ लोकप्रिय भक्ति रचनाओं का सौंन्दर्यात्मक विश्लेषण

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय (अमृतसर) के तत्वावधान के अंतर्गत हंसराज महिला विद्यालय जालंधर के गायन–संगीत विभाग में एम•ए• की उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध परियोजना ।

निर्देशक व निरीक्षक

डॉ• प्रेम सागर, श्रीमती राधिका सोनी

शोधार्थी

प्रियंका कुमारी

गायन संगीत विभाग

हंसराज महिला महाविद्यालय

जालंधर–2022

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि प्रियंका कुमारी ने प्रस्तुत लघु शोध परियोजना ''हिंदी फिल्म संगीत से चुनी गई लोकप्रिय कुछ भक्ति रचनाओं का सौन्दर्यात्मक विश्लेषण'' लगन एवम परिश्रम से सम्पन्न किया हैं। ऐसा करते हुए शोधार्थी ने शोध प्रक्रिया की तकनीकों को आत्मसात् करने का भरसक प्रयास किया है। पाठ्यक्रम के निर्देशानुसार शोधार्थी ने विषय का चयन करते हुए शोध प्रक्रिया का संतोषजनक निर्वाहन किया है ।

निर्देशक के हस्ताक्षर

निरीक्षक के हस्ताक्षर

घोषणा पत्र

मैं प्रियंका कुमारी एम.ए समैस्टर–IV की छात्रा घोषणा करती हूँ कि मैंने यह लघु शोध परियोजना अपनी मेहनत तथा लगन के साथ पूर्ण की है। मेरे इस शोध कार्य के निर्देशक डॉ• प्रेम सागर तथा निरीक्षक श्रीमती राधिका सोनी (सहायक अध्यापक) के कुशल मार्गदर्शन के अधीन सम्पन्न हुआ है।

शोधार्थी के हस्ताक्षर

विषय सूची

हिंदी फिल्म संगीत से कुछ चुनी गई लोकप्रिय भक्ति रचनाओं का सौंन्दर्यात्मक विश्लेषण :

प्रथम अध्याय : हिंदी फिल्म संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1.1 संगीत की परिभाषा

1.2 संगीत का इतिहास

1.3 संगीत का वर्गीकरण

1.3.1. शास्त्रीय संगीत (Classical Music)

1.3.2. भाव संगीत (Light Music)

1.4 संगीत का क्रमिक विकास

1.5 फिल्मी संगीत का प्रादुर्भाव

1.6 फिल्मी संगीत के इतिहास का विभाजन

1.6.1 मूक अर्थात् निर्वाक फिल्में

1.6.2 बोलती अर्थात् सवाक फिल्में

द्वितीय अध्याय : शोध प्रविधि

2.1 समस्या कथन

2.2 अध्ययन का उद्देश्य

2.3 अध्ययन का महत्त्व

2.4 शोध विधि

2.5 दत्त स्त्रोत

2.6 शोधकार्य का सीमांकन

तृतीय अध्याय :

हिंदी फिल्म संगीत से कुछ चुनी गई लोकप्रिय भक्ति रचनाओं का सौंन्द्रर्यात्मक विश्लेषण :

3.1 सांगीतिक सौंन्दर्य

3.1.1. Aesthetics शब्द का अर्थ

3.1.2. Aesthetics के बारे में विद्वानों के भिन्न–भिन्न मत

3.2 हिंदी फिल्म संगीत से चुनी गई 20 भक्ति रचनाओं का उल्लेख

3.3 कुछ भक्ति रचनाओं का भावात्मक विश्लेषण

प्रथम अध्याय

1. हिंदी फिल्म संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

मानव एक भावनाशील प्राणी है। मानवीय मन में भावनाओं का उमड़ना तथा उनकी अभिव्यक्ति एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जिस तरह मनुष्य सांस लेता है और पानी पीता है, इसी तरह भाव भी उसके जीवन का एक आवश्यक प्राकृतिक अंग है। अपनी भावनाशीलता की अभिव्यक्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न माध्यम अपनाता है। बातचीत करना, लिखना, हंसना, रोना, गाना, बजाना, चित्रकारी, मूर्तिकला आदि सभी भावाव्यक्ति के साधन है। इन साधनो में से विभिन्न लोग अपने भावाव्यक्ति के लिए कोई न कोई माध्यम चुन लेते हैं। गाना, बजाना यानी भाव अभिव्यक्ति का एक अत्यन्त प्रभावशाली और स्वाभाविक माध्यम है।

1.1 संगीत की परिभाषा :

''सुव्यवस्थित ध्वनि, जो रस की सृष्टि करे, संगीत कहलाती है। गायन, वादन व नृत्य तीनो के समावेश को संगीत कहते हैं। संगीत नाम इन तीनों के एक साथ व्यवहार से पड़ा है। गाना, बजाना और नाचना प्रायः इतने पुराने है, जितना पुराना आदमी है।''[1]

गायन मानव के लिए प्रायः उतना ही स्वाभाविक है, जितना भाषण। कब से मनुष्य ने गाना प्रारंभ किया, यह बतलाना उतना ही कठिन है। परन्तु बहुत काल बीत जाने के बाद उसके गायन ने व्यवस्थित रूप धारण किया।

---

[1] संगीत बोध, डॉ॰शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे, पृष्ठ–2

''सम्यक गीयते इति संगीतम [1]''

अर्थात् जो अच्छी तरह गाया जाए, उसे संगीत कहते हैं। व्याकरण की दृष्टि से यदि 'संगीत' शब्द को समझा जाए तो पता चलता है कि संगीत 'शब्द 'सम' और 'गीत' दो शब्दों के समावेश से बना है। 'सम' का अर्थ है ;सम्यक' या भली भांति और 'गीत' का अर्थ 'गीतम्' या 'गाना'। इस प्रकार किसी रचना को भली भांति या अच्छी तरह गाना ही, संगीत कहलाता है। पंडित शारंगदेव ने अपने ग्रंथ 'संगीत रत्नाकर' में संगीत की परिभाषा इस प्रकार दी हैं।

''गीतम् वाद्यम तथा नृत्यमत्रयः संगीतमुच्यते''[2]

अर्थात् गायन, वादन तथा नृत्य – इन तीनों कलाओं के समन्वय को संगीत कहते हैं।

प्राचीन काल में इन तीनों कलाओं का प्रयोग प्रायः एक साथ ही किया जाता था, परन्तु गीत अथवा गायन की प्रधानता होनें के कारण इनके लिए 'संगीत' नाम का प्रयोग किया गया।

गायन : किसी गीत द्वारा अथवा गाकर मन के भावों को प्रकट करने की कला को 'गाना' या 'गायन' कहा जाता है। गायन में स्वर, शब्द, लय और ताल का समावेश होता है।

वादन : किसी वाद्य को बजाकर अपने मन के भावों को प्रकट करने की कला को 'बजाना' अथवा 'वादन' कहा जाता है। वादन कला में गीत की भांति शब्द नहीं होते। इसमें स्वरो की प्रधानता होती है परन्तु वाद्य के मूल में भी किसी न किसी रूप में गायन विद्यमान रहता है।

---

[1] पं॰पाठक नारायण जगदीश, संगीत निबंध माला, पृष्ठ–1

[2] शारंगदेव प्रथम स्वाराध्याय संगीत रत्नाकर, श्लोक–21,22

नृत्य : शारीरिक हाव–भाव द्वारा मन के भावों को प्रकट करने की कला कों 'नृत्य' या 'नाचना' कहते हैं। नृत्य में लय और ताल की प्रधानता होती है। स्वर अथवा गायन, सौन्दर्य बढ़ाने में तथा भाव उत्पन्न करने मे सहायक होते हैं।

1.2 संगीत का इतिहास : युद्ध उत्सव और प्रर्थाना या भजन के समय से मानव गाने बजाने का उपयोग करता चला आया है। संसार में सभी जातियों में बाँसुरी इत्यादि फूँक के वाद्य (सुषिर) कुछ तार या ताँत के वाद्य (अवनद्ध) कुछ चमड़े से मढ़े हुए वाद्य (अवनद्ध) कुछ आघात करके बजाने वाले वाद्य (घन) मिलते हैं।

ऐसा जान पड़ता है कि भारत में आचार्य 'भरत' के समय तक गाान को पहले केवल 'गीत' कहते थे। वाद्य रूप में जहाँ गीत नहीं होता था, केवल दारा, दिर–दिर जैसे शुष्क अक्षर होते थे, वहाँ उसे 'निर्गीत' या 'बहिर्गीत' कहते थे और नृत्त अथवा नृत्य की एक अलग कला थी। किन्तु धीरे–धीरे गान, वाद्य और नृत्य तीनों का संगीत मे अंतर्भाव हो गया।

1.3 संगीत का वर्गीकरण : संगीत को 2 भागों में विभाजित किया गया है जो कि इस प्रकार है –

1.3.1 शास्त्रीय संगीत (Classical)

1.3.2 भाव संगीत (Light Music)

1.3.1 शास्त्रीय संगीत : शास्त्रीय संगीत का अर्थ है – शास्त्राधारित संगीत। शास्त्रीय संगीत, स्वर, ताल, राग और लय आदि संगीत शास्त्र के कुछ खास नियमों के आधार पर गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत, संगीत शास्त्र द्वारा नियमबद्ध होकर गाया बजाया जाता है। दूसरे शब्दों में जो संगीत स्वर, ताल, राग और लय आदि के नियमों का पालन करते

हुए गया बजाया जाता है, उसे शास्त्रीय संगीत कहते हैं। साधारण भाषा में इसे ''पक्का गाना'' भी कहा जाता है। यही कारण है कि जन–साधारण इसे आसानी से नहीं समझ पाते। शास्त्रीय संगीत को समझने के लिए संगीत के ज्ञान की आवश्यकता होती है।

''शास्त्रीय संगीत स्वर समृद्ध है, विशाल है। इसमें इतना भण्डार है, इतनी निधि है कि वह सागर के समान 'राई बढ़े न तिल घटे' प्रतीत होता है।''

शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी आदि शैलियाँ हैं जो समय–समय पर परिवर्तित होती रही हैं।

1.3.2 **भाव संगीत** : भाव संगीत का उद्देश्य जन मनोरंजन करना होता है। इसमे संगीत शास्त्र के कठोर नियमों का पालन नहीं होता। स्वर, लय और काव्य के समन्वय से मन के भावो को प्रकट करके, जन मनोरंजन करना ही इस संगीत का मुख्य उद्देश्य होता है। विशेष त्यौहारों के गीत, भजन, फिल्मी गीत, विवाह के गीत इत्यादि इसी श्रेणी के अर्न्तगत आते हैं। हिन्दुस्तानी फिल्मी संगीत भाव संगीत के अर्न्तगत ही शामिल है।

1.4 संगीत का क्रमिक विकास :

प्रस्तुत अध्याय की परिकल्पना को अग्रसर करते हुए तथा मुख्य उद्देश्य फिल्म संगीत की ओर बढ़ते हुए संगीत के क्रमिक विकास का उल्लेख अभीष्ट प्रतीत होता है क्योंकि फिल्म संगीत भी उसी विकास के क्रम की एक बड़ी कड़ी है। वर्तमान समय में मानव समाज को संगीत कला का गौरवशाली और भव्य रूप प्राप्त है। शास्त्रीय संगीत की विभिन्न श्रेणियों जैसे – ध्रुपद, धमार, ख्याल आदि उपशास्त्रीय संगीत में ठुमरी, टप्पा, दादरा, आदि तथा सुगम संगीत में लोक गीत, भजन, गज़ल, शब्द, गीत एवम फिल्मी गीत इत्यादि प्राप्त है। से सब कुछ आज के अतिरिक्त विभिन्न

कुंठाओं से ग्रस्त मानव के लिए वरदान है। परन्तु इस सारी उपलब्धि के पीछे हज़ारों वर्ष का समय और असंख्य साधकों की साधना व तपस्या विद्यमान है।

संगीत अनादिकाल से मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है। प्रारम्भ में मानव स्वच्छंदता से अपनी भावनाओं के अनुकूल कुछ कह देता था, उसे वह मालूम नही था कि वह क्या गाता है। अतः उसका संगीत, उसका गाना पूर्ण तथा स्वाभाविक व प्राकृतिक था। जैसे–जैसे मानवीय चेतना का विकास हुआ उसने अपनी विभिन्न क्रियाओं के बारे में बुद्धिपूर्ण ढंग से सोचना शुरू किया। जब किसी बुद्धिजीवी का ध्यान मानवीय कंठ से प्रस्फुटित होनें वाले गायन की ओर गया तो उसने इस रसीले और आनन्द–दायक वरदान को पकड़ने की कोशिश की। उसे ऐसा अनुभव हुआ कि उसका समस्त संगीत 2–3 स्वरों पर अवलम्बित था, इसे ही लोक संगीत की संज्ञा दी गई। वैसे तो संगीत का विकास अनादि काल से ही हो रहा है, परन्तु संगीत के क्रमिक विकास की प्रमाणिक जानकारी वैदिक काल से प्राप्त होती है। वैदिक काल का समय ईसा से 1500 वर्ष पूर्व माना गया है। इस काल में हिन्दू धर्म के चार वेदों के रचना हुई – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। यहीं वे धर्म और संस्कृति के मूल स्त्रोत है। वैदिक वांग्मय से हमें स्वर और सप्तक के विकास की प्रामाणिक जानकारी मिलती है। उदात्त, अनुदात्त और स्वरित ; इन तीनों स्वरो के आधार पर सप्तक सम्पूर्ण हुआ।

1.5 फिल्मी संगीत का प्रादुर्भाव :

हिंदी फिल्म संगीत के इतिहास का समय लगभग 100 वर्ष का है, इस लघु समय में भारतीय चित्रपट में बहुत से परिवर्तन आए। हर सदी अभिव्यक्ति के लिए अपना प्रिय

माध्यम चुनती है। बीसवीं सदी विज्ञान की सदी रही है और गुज़री 19 सदियो में से सबसे अधिक विज्ञान की प्रगति इसी एक सदी में हुई। विरोधाभासों की इस सदी में नैतिक पतन भी बहुत हुआ ''इस सदी के सुख–दुःख को अभिव्यक्त करने के लिए सिनेमा से बेहतर माध्यम कोई नहीं हो सकता था क्योंकि यह एक मात्र कला–माध्यम है जो मशीन की कोख से जन्म लेता है।''[1]

सिनेमा आधुनिकतम् कला, विद्या है जिसका जन्म कुछ वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरुप हुआ। लेकिन उसे कला–विद्या का दर्जा दिलाने वाले वैज्ञानिक नहीं बल्कि निर्देशक, कैमरामैन, लेखक, संगीतकार तथा अन्य सांस्कृतिक कर्मी थे। सिनेमा न ही कला और विज्ञान, दिल और दिमाग के समन्वय से एक नए कला रूप को स्थापित किया। 3 मई 1913 को मुंबई के कोरोनेशन हॉल में दादा साहेब फाल्के द्वारा निर्मित प्रथम भारतीय फीचर फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' का प्रर्दशन हुआ जो कि 60 मिनट लंबी मूक फिल्म थी।

''फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' के रिलीज़ से भारतीय रूपक चित्र पूर्ण रूप से अस्तित्व में आया और उसी के साथ फिल्मे उद्योग का शिलान्यास हुआ।''[2]

पहला मूक अर्थात निर्वाक फिल्मों का युग (1913 से 1930 तक)

दूसरा बोलती अर्थात सवाक फिल्मों का युग (1931 से अब तक)

भारत में 14 मार्च 1931 को पहली बोलती फिल्म 'आलम–आरा' आई थी, जिससे फिल्मों में संगीत भी प्रवेश कर गया। फिल्म संगीत के इतिहास में 1941 में फिल्म 'झूला'

[1] डॉ•'सौरभ' शर्मा इंदु, भारतीय फिल्म संगीत मे ताल–समन्वय, पृष्ठ–15
[2] रंगुनवाल फिरोज, भारतीय चलचित्र का इतिहास, पृष्ठ–21

आई इसके गीतों ने लोगों को रस विभोर कर दिया आज भी ''मैं तो दिल्ली से दुल्हन लाया रे'' बहुत याद आ जाता है।

1947 में गायक के एल. सहगल की मृत्यु होने से फिल्म संगीत को गहरा धक्का लगा। इसकी पूर्ति हेतु नए–नए गायक–गायिका फिल्म संगीत क्षेत्र में जुड़े। उनमें लता मंगेश्कर, आशा भोंसले, मोहम्मद रफ़ी, मुकेश, किशोर कुमार आदि रहे।

1.6 फिल्मी संगीत के इतिहास का विभाजन :

भारतीय फिल्म इतिहास को 2 भागों में विभक्त किया है चूंकि इस प्रकार –

1.6.1 मूक अर्थात निर्वाक फिल्में

1.6.2 बोलती अर्थात् सवाक फिल्मे

1.6.1 मूक अर्थात् निर्वाक फिल्में :

मूक फिल्मों के ज़माने में भारत में ही नहीं बल्कि दूसरे देशों में फिल्मकार भी यह आवश्यक मानते थे कि वे फिल्मों के लिए ऐसी कहानियां चुने जिन्हें लोग पहले से जानते हों। 'राजा हरिश्चन्द्र' का चुनाव भी यही सोचकर दादा साहेब फाल्के ने किया, जिसके चरित्रों को आम दर्शक आसानी से पहचान सकता था। यह एक ऐसी पौराणिक कथा थी जो भारतीय जनमानस के जीवन मे पूरी तरह रच–बस चुकी थी। दादा साहेब फाल्के ने 'राजा हरिश्चन्द्र' के बाद भी 1913–1917 तक अपनी फिल्मों के कथानक पौराणिक कथा साहित्य पर ही चुनें और 'पुंडलीक', 'कृष्ण जन्म', 'कालिया मर्दन', 'सत्यवान सावित्री, लंका–दहन', 'भस्मासुर', 'मोहिनी' आदि फिल्में बनाई। उनकी फिल्म लंका–दहन ने कामयाबी के कीर्तिमान बनाएं।

दादा साहेब फाल्के की सफलता से प्रेरित होकर इसी वर्ष कलकत्ता में एलफिंस्टन सिनेमा एण्ड थियेटर कंपनी के मालिक जे.एफ मदन ने बंगाल की पहली फिल्म 'नलदमयन्ती' का निर्माण किया। 1919 में आनंदी नाथ बोस ने 'रत्नाकर, पी.वी दत्त, एन.सी लहरी, जे.जी.सरकार और धीरेन गांगुली ने कॉमेडी फिल्म 'इंग्लैंड–रिटर्न' बनाई। 1920 में ही 'शकुंतला' 'वत्सलाहरण' बनी। दक्षिण में 'भीष्म–पितामह', 'कोरल–क्वीन', 'प्राउड ऑफ सत्यभामा', 'ज्ञान–सुंदरी', 'सती कौशल', 'बैगर मीट वैगर', 'चौहानी–तलवार', 'कॉमेट', 'वफादारी' और 'शेरदिल' प्रमुख रही हैं।

1.6.2 बोलती अर्थात् सवाक फिल्में :

जैसा कि हम पहले भी बता चुके हैं कि भारत में 14 मार्च 1931 की पहली बोलती फिल्म 'आलम–आरा' से ही फिल्मों में संगीत भी प्रवेश कर गया इस फिल्म में फिरोजशाह, एम.मिस्त्री एवम बी.ईरानी ने संगीत दिया था। इसमें पहला गाना 'दे–दे खुदा के नाम पे', डब्ल्यू.एम.खान ने गाया था। तब रंगमंच पर पारसी 'शैली के नाटको का पूरा–पूरा प्रभाव था। इन नाटकों में तड़क–भड़क थी और गीतों तथा रागबद्ध संगीत का प्रयोग इनकी मुख्य विशेषता थी। इस फिल्म में हारमोनियम, तबला व सारंगी का ही प्रयोग किया गया था। इसमें सात गाने थे।

- सवाक फिल्मो के आगमन के साथ ही फिल्मों में गीतों का प्रचलन शुरु हुआ उन दिनों सुरिन्द्र, के.एल.सहगल, रामानंद पंडित, गौहर बाई, राजकुमारी आदि ऐसे कलाकार थे, जो अभिनय के साथ–साथ गाना भी गा सकते थे।
- ''रिकार्ड के अनुसार सबसे पहली बोलती फिल्म सितम्बर 1930 में मुम्बई के कृष्णा सिनेमा में एम.जी.ए. की एक टॉकी की फिल्म के साथ दिखाई गई थी। ये दो लघु

चित्र थे, जिनका ध्वनि और संगीत के साथ मेल बिठाया गया था। 'आर्देशिर ईरानी' ने सबसे पहले 'आलम–आरा' बनाकर भारत की पहली बोलती फिल्म के निर्माता होने का श्रेय प्राप्त किया। 'आलम–आरा' से पहले अनेक मूक फिल्में बना चुके 'आर्देशिर ईरानी' को विदेश फिल्म बनाने की प्रेरणा मिली। इस फिल्म को उन्होंने 1929 में देखा और देखते ही फैसला किया कि वे स्वदेशी भाषा में सम्पूर्ण बोलती फिल्म बनाएंगे।''[1]

'आर्देशिर ईरानी' में कुछ नया करने की ललक थी, सो दुनिया की पहली बोलती फिल्म 'जॉज–सिंगर' (1929) बनी तो वे तभी स सक्रिय हो गए।

'आलम–आरा' एक पूरी बोलती, नाचती, गाती फिल्म थी और यह एकदम हिट हुई। इसकी 1–1 टिकट ब्लैक में 5–5 रूपऐ में बिकी थी।

सन् 1942–43 में नए गायक कलाकारों का जमाना आया जिनमें मन्नाडे, हेमंत कुमार, तनत, मोहम्मद रफ़ी, लता मंगेशकर, किशोर कुमार, आशा भोंसले, सुमन कल्याणपुर, उषा खन्ना तथा महेन्द्र कपूर आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन कलाकारों के आगमन से फिल्म संगीत में आवाज़ का नया दौर चला। अभिप्राय यह है कि इन गायक–गायिकाओं की आवाज़ का अंदाज पूराने गायको जैसे सहगल, सुरैया तथा पंकज मलिक से भिन्न था, जो कि समय के अनुकूल तथा सुखद भी था। रफ़ी, मुकेश, किशोर कुमार, जैसे कई प्रतिभाशाली गायक आज हमारे बीच नहीं रहे, परन्तु उनकी कला और आवाज़ आज भी जिंदा है तथा सदियों तक जिंदा रहेगी। इनके बाद आए पाशर्व गायकों में से यशुदास, दिलराज कौर, अमित कुमार, कविता कृष्णमूर्ति, पिनाज मसानी, जगजीत सिंह,

[1] डॉ 'सौरभ' इंदु 'शर्मा, भारतीय फिल्म – संगीत में ताल – समन्वय, पृष्ठ – 21

पंडित सुरेश वाडेकर, अनुराधा पौंडवाल, हेमलता आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिनका गाना बहुत मधुर है।

द्वितीय अध्याय

2. शोध प्रविधि :

किसी भी शोध कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए किसी विशेष विधि का प्रयोग किया जाता है। सही शोध विधि ही शोध कार्य को लक्ष्य तक पहुंचाने में मददगार साबित होती है। शोध कार्यो के अनुकूल ही विशेष विधि का प्रयोग करके शोध कार्य की सम्पूर्णता प्रदान की जाती है।

2.1 समस्या कथन :

हिंदी फिल्म संगीत से कुछ चुनी गई लोकप्रिय भक्ति रचनाओं का सौंन्दर्यात्मक विश्लेषण।

2.2 अध्ययन का उद्देश्य : इस लघु परियोजना का उद्देश्य हिंदी फिल्मी संगीत से चुनी गई कतिपे लोकप्रिय भक्ति रचनाओं का अध्ययन करके उनमें निहित सांगीतिक और भावात्मक सौंदर्य को समझना तथा उसे आत्मसात् करना इस लघु शोध प्रयोजना का उद्देश्य है किस प्रकार भक्ति रचनाएं मानवीय जीवन पर अपना असर छोड़ती है। इस तथ्य को प्रकाशित करना भी इस अध्ययन का उद्देश्य है। विभिन्न भक्ति रचनाओं को गाने से उनमें प्रयुक्त रस का पता चलता है। प्रत्येक भक्ति रचना का अपना–अपना भाव व सीख होती है। भक्ति रचनाएं व उनमें प्रयुक्त भाव हमें सीधा ईश्वर से जोड़ते हैं व हमारे मन रूपी रावण को राम में बदलने की शक्ति रखते हैं। वहीं सही संस्कारो की दिशा दिखाते हैं।

2.3 अध्ययन का महत्त्व :

प्रस्तुत लघु शोध परियोजना के अध्ययन का महत्त्व इस बात में निहित है कि इसके माध्यम से हिंदी फिल्मी संगीत की कुछ लोकप्रिय रचनाओं को समझने, अभ्यास करने और उनके सांगीतिक शब्द सौंदर्य को आत्मसात् करने का अवसर मिलेगा जो कि किसी भी विद्यार्थी के सांगीतिक सफ़र में सहायक सिद्ध हो सकता है।

2.4 शोध विधि :

विषय की आवश्यकता के अनुसार ही शोध विधि अपनाई जाती है। इस शोध परियोजना को पूरा करने के लिए व्याख्यात्मक तथा ऐतिहासिक विधि अपनाई गई है।

2.5 दत्त स्त्रोत :

प्रस्तुत लघु शोध परियोजना हेतु दत्त संकलन के लिए प्राथमिक और माध्यमिक दोनों स्त्रोतों को अपनाया गया है। प्राथमिक स्त्रोत अपने अध्यापकों से गुण चर्चा तथा माध्यमिक स्त्रोतों में पुस्तकें पत्र–पत्रिकाएं तथा इंटरनैट (Internet) शामिल हैं।

2.6 शोध कार्य का सीमांकन :

समय सीमा को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने अध्ययन को हिंदी फिल्मों में से लिए गए 20 भक्ति रचनाओं तक ही सीमित किया है।

तृतीय अध्याय

हिंदी फिल्मी संगीत से कुछ चुनी गई लोकप्रिय भक्ति रचनाओं का सौंदर्यात्मक विश्लेषण।

जीवन में सुन्दरता सदा ही स्वागत योग्य होती है। भारतीय दर्शन का मूल संदेश है –

''सत्यम शिवम् सुन्दरम''

जो सत्य है वही कल्याणकारी है जा कल्याणकारी है वही सुन्दर है। इसी दर्शन सूत्र को कलाओं में, साहित्य में हमेशा खोजने की कोशिश की जाती है।

3.1 सांगीतिक सौंदर्य :

संगीत में गायन को प्रमुख/प्राथमिक माना गया है। अर्थपूर्ण काव्य को स्वर ताल में संयोजित करके जब हम गाते, बजाते हैं तो गायन की सृजना होती है। गायन का अध्ययन करने उपरान्त उसमें शब्द का क्या भाव है। धुन की क्या खूबसूरती होती है का पता चलता है।

भारतीय संगीत में सौन्दर्य के सामान्य उपकरणों की बहुत बड़ी उपयोगिता है। गायन, वादन तथा नृत्य का प्रदर्शन करते हुए, समय स्वर, लय तथा ताल की समानता और उनकी विविधता से सौन्दर्य उत्पन्न होता है। कठिन लयकारियों के प्रयोग में आर्विभाव–तिरोभाव, अल्पत्व–बहुत्व से सौन्दर्य की उत्पत्ति होती है। संगीत में आपेक्षित सामग्रियो की सुव्यवस्था से अनेक लयकारियो का प्रयोग करते हुए सम आकार अनेकता में एकता, उचित काल में राग गायन तथा उचित स्वर लगाव के द्वारा औचित्य से गायन, वादन तथा नृत्य में वाद्यों की संगति से स्वर, लय और ताल पर संयम प्राप्त करने से

मनोगत् भावों की अभिव्यंजना से तथा विवादी स्वरों के कुशल प्रयोग द्वारा भी संगीत में सौन्दर्य की सृष्टि होती है।

इन सब जानकारियों पर अध्ययन करने उपरान्त हम Aesthetics का अध्ययन करते व जानते हैं।

3.1.1. Aesthetics शब्द का अर्थ

Aesthetics शब्द का अर्थ – ''सुंदरता''

सुंदरता किसी एक वस्तु तक सीमित नहीं है अर्थात् सम्पूर्ण संसार सुंदरता से भरपूर हैं। संसार कण–कण में सुंदरता व्यापक है। प्रचीनकाल में मनुष्य जब सभ्यता और समाज के साथ संबंधित था, तब भी उसको सुंदरता बढ़ाने का लालच था। वह अपने लिए हड्डियों के गहने बनाता था और तरह–तरह से अपने घर को सजाता था। सुंदरता शब्द का प्रयोग जितना समान और व्यापक है इसका अर्थ उतना ही रहस्यपूर्ण है। सुन्दरता को जिन तत्वों पर परिभाषित किया जाए, उसका विश्लेषण नहीं किया जा सकता क्योंकि अलग–अलग सुंदरता शास्त्रियों ने इसकी अपने–अपने ढंग के साथ व्याख्या की है

Aesthetics का शाब्दिक अर्थ :

Aesthetics शब्द ग्रीक भाषा के Aetotic/Aetic शब्द से हुआ। जो बाद में बदलकर Aesthetic और बाद में Aesthetics में प्रयोग हुआ।

3.1.2. Aesthetics के बारे में अलग–अलग विद्वानों के भिन्न–भिन्न मत है, वह इस प्रकार है।

1. **शालिर के अनुसार** : ज्ञानी के लिए 'सच' ही सुन्दरता है। भावुक हृदय के लिए 'सुंदरता' ही सच है।
2. **Aristotle :** के अनुसार परिचय पत्र की अपेक्षा सुंदरता स्वयं एक बड़ी सिफारिश है।
3. **महात्मा गांधी जी के अनुसार** : वास्तव में 'सुंदरता' ही हृदय की भाषा है।
4. **सुकरात के अनुसार** : सुंदरता और शिव एक ही है।
5. Pleto के अनुसार : संगीत मनुष्य के लिए लाभदायक व सुखदायक है।

3.2 ऊपर वर्णित सौंन्दर्य तत्व के प्रकाश मे यहां पर हिंदी फिल्म संगीत से चुनी गई 20 भक्ति रचनाओं का उल्लेख किया जा रहा है।

3.3 कुछ भक्ति रचनाओं का भावात्मक विश्लेषण :

1. **इतनी शक्ति हमें देना दाता**

   मन का विश्वास कमज़ोर हो ना

   हम चलें नेक रस्ते पे

   हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना ।

हे ईश्वर ! हमें इतनी शक्ति दो, जिससे मन का विश्वास कमज़ोर ना हो जाए। हम सदा भलाई की राह पर आगे बढ़े, भूलकर भी अनजाने में भी हमसे कोई भूल न होने पाए। हमेशा सही कर्म करें व सच्चाई की राह चुनें।

राग पीलू और दादरा ताल की चाल में संयोजित ये शब्द रचना इतनी मर्मस्पर्शी बन गई है, जिससे गाने वाला व सुनने वाला एकचित्त हो जाता है।

2. **ऐ मालिक तेरे बन्दे हम**

   ऐसे हो हमारे कर्म

   नेकी पर चलें और बदी से टलें

   तांकि हंसते हुए निकले दम

ऐ खुदा ! हम आपके ही तो बच्चे हैं। हमें सदा अपने आपसे जोड़े रखना। हमें अच्छी सोच प्रदान करना, जिससे हम सदा अच्छा करें व सच्ची राह चुने और जीवन जिएं तो आपका नाम लेकर, दम निकले तो आपका नाम लेकर। मरते वक्त खुद से शिकायत ना हो, हम ऐसे कर्म करें।

राग भैरवी और कहरवा ताल के संगीत संयोजन ने इस भक्ति रचना का रूप ही बदल दिया, जिससे यह रचना सुनने वाले व स्वयं गाने वाले को आनंदमयी प्रतीत होती है। एक पल के लिए ये रचना हकीकत में ही जैसे हमें खुदा से जोड़ देती है।

3. **यशोदा का नंदलाला**

   ब्रिज का उजाला है

मेरे लाल से तो सारा जग झिलमिलाए

रात ठंडी ठंडी हवा गा के सुलाए

भोर गुलाबी पल्कें झूम के जगाए।

इस भक्ति रचना में माता यशोदा खुद का अपने लाल (कान्हा) के प्रति प्यार दिखा रही है। वह अपने लाल से कह रही है ''मेरा नंदलाल कान्हा तो मेरा प्यारा है'' और ब्रिज की मुस्कान है। जिसकी एक मुस्कान से सारा जग रोशन हो जाता है, झिलमिलाने लगता है। यह मौसम भी मेरे लाल से लाड़ करता है। यह रात की ठंडी चलती हवा लोरी सुनाकर मेरे कान्हा को सुलाती है व चमकती हुई सुबह मेरे लाल को जगाती है। ये तो सबका है, बस यही बताती है।

राग मधुमाद सारंग और कहरवा ताल में सजाई गई यह भक्ति रचना दिल को छूने वाली रचना है, जो सीधे हमें वृन्दावन व मथुरा ले जाती है, कल्पना में ही हमें पूरी भक्ति रचना का दृश्य दिखा देता है।

4. **तेरी है जमीं, तेरा आसमाँ**

तू बड़ा मेहरबां, तू बख्शीश कर

सभी का है तू, सभी तेरे

खुदा मेरे, तू बख्शीश कर

तेरी है जमीं।

प्रस्तुत भक्ति रचना में हम ईश्वर से कह रहे हैं कि ये जमीं, ये आसमां सब कुछ तेरा है। ये सुबह तुझसे होती है और ये रात तुझ पर खत्म हो जाती है। इस पूरे विश्व का बस एक तू ही हैं। मौत के साथ–साथ अगर कुछ सत्य है, इस जहां में तो वो बस एक तू ही है। तुझसा ना कोई दयालु है, ना ही कोई दानवीर। तू ही वो

ईश्वर रूपी रोशनी है, जो सभी के रोम–रोम में बसी है। तू हमारा है और हम तेरे हैं। तू जग का पिता हैं और हम तेरे बच्चें हैं

राग बिलावल के स्वरों पर आधारित और कहरवा ताल में गाई गयी ये भक्ति रचना हमारी उस परमपिता परमेश्वर तक प्रर्थाना पहुंचा रही है और हमें उस ईश्वर की याद दिलाकर सीधा उससे जोड़ देती हैं।

5. **कान्हा सोजा ज़रा**

ओ रे बंसी बजईया

नन्दलाला कन्हैया

मोहे मोहे ऐसे न छेड़ो सांवरे

सुनो सुन मोसे नहीं खेलो दांव रे

जा के यशोदा स कह दूंगी रे

ओ कान्हा सो जा ज़रा

ओ कान्हा सो जा ज़रा

प्रस्तुत भक्ति रचना में राधा और कृष्ण की नोक झोंक का वर्णन किया गया है जिसमें राधा कृष्ण को कह रही है – सुनो मुरलीधर नन्द के लाल मुझे सताना व छेड़ना बंद करो। इस भक्ति रचना में श्री कृष्ण राधा को सता रहे हैं व तंग का रहे हैं। जिससे परेशान होकर मुस्कुराते हुए राधा कृष्ण को कहती है, मेरे साथ दांव ना खेलो नहीं ंतो तुम्हारी शिकायत जा के ''माँ यशोदा'' से कर दूंगी और उन्हें जाकर सोने को कह रही है। प्रस्तुत भक्ति रचना में राधा कृष्ण की छोटी सी मस्ती भरी लड़ाई को दर्शाती है और वो भी ऐसी लड़ाई जिसमें गुस्से से ज़्यादा व बढ़कर प्रेम की झलक है। इन दोनों का एक–दूसरे के प्रति अंदरूनि प्रेम को दर्शाया गया है

राग बिलावल के स्वरों पर आधारित और कहरवा ताल में प्रस्तुत ये भक्ति रचना हमें राधा कृष्ण के प्रिय संबंध व एक–दूसरे के प्रति उनका सम्मान दिखाती है।

6. **सुख के सब साथी, दुःख मे ना कोई**

   सुख के सब साथी, दुःख मे ना कोई

   मेरे राम, मेरे राम, तेरा नाम एक साँचा दूजा ना कोई

   सुख के सब साथी, दुःख मे ना कोई।

   प्रस्तुत भक्ति रचना के शब्दों का भाव काफी दिल को छूने वाला है। जिसमें बताया गया है कि सुख में तो सब साथ देते हैं व खुशी में सब शामिल हो जाते हैं, परन्तु दुःख में कोई किसी का साथी नहीं होता, गम आते ही सब मुंह फेर लेते हैं। दुःख में कोई भी ऐसा नहीं होता, जो हाथ पकड़कर ये कहे ''चिंता मत करो, हम साथ हैं'' बल्कि गम में जख्म को बढ़ाने वाले ही है। जिसमें हमें से बताने का प्रयत्न किया जा रहा है कि चाहे सुख हो या चाहे दुःख हो उस ईश्वर को सदा याद रखना चाहिए ''राम'' का नाम ही सच है, इस सृष्टि में बाकी सब झूठ है। बस ''राम'' नाम भज रे मन मोह माया का त्याग कर, ना किसी से उम्मीद कर तू मन! राग दरबारी के स्वरों पर आधारित और कहरवा ताल में गायी गई ये भक्ति रचना हमें सच से वाकिफ़ करवा ''राम नाम'' से जोड़ती है।

7. **राम धुन गाओ, कृपाल धुन गाओ**

   राम धुन गाओ, कृपाल धुन गाओ

   दुनिया की सबसे कमाल धुन गाओ

   दुनिया की सबसे कमाल धुन गाओ

   जिसकी कोई मिसाल ना जग में

झूम के वो बेमिसाल धुन गाओ

वही मारे वही तारे

तेरी मेरी क्या औकात उसी के दम से सूरज चंदा

उसी के दम से दिन और रात।

प्रस्तुत भक्ति रचना में हमें राम का नाम लेने व ''राम नाम'' की शक्ति का वर्णन किया है। कहा है कि ''राम नाम'' की ही धुन गाओ। पूरी दुनिया में अगर कोई सबसे मधुर व मन में घर करने वाली कोई धुन हैं तो वो केवल ''राम नाम'' की ही धुन है। 'राम' का नाम गाओ, झूमकर मस्ती में उस ईश्वर के नाम 'राम' में खो जाओ। वही मारने वाला वही तारने वाला है। उसके सामने किसी की कोई औकात नहीं है। सब में वो समाया हुआ है। वो ''समय''है। उसी के दम से ही सूरज है और उसी के दम ही से चंदा है। हवा, पानी, धूप, छाव सब जगह में वही है। पूरा ब्रह्माण्ड उसी में समाया है, वो अनन्त है।

राग खमाज पर आधारित और कहरवा ताल में गायी गई यह भक्ति रचना हमें ''राम नाम'' का अर्थ बताती है व इस एक नाम में कैसे पूरा ब्रह्माण्ड समाया है।

निष्कर्ष

हिंदी फिल्म संगीत बहुत समृद्ध व उत्तम रचनाओं से भरा हुआ है और जो हमारी फिल्में बनी हैं उनमें जीवन के सभी पहलुओं को समाहित करने का प्रयास किया गया है। मैंने अपनी इस लघु शोध परियोजना के लिए भक्ति रचनाओं को इसलिए चुना, क्योंकि मेरा बचपन से रूझान भक्ति रचनाएं गाने की तरफ है और मेरे अध्यापक ने मेरे इस रूझान को समझते हुए मुझे ये संकेत दिया। जहाँ तक भक्ति रचनाओं की महत्ता की बात है, ये रचनाएं जन साधारण के लिए अच्छे संस्कार देने में सक्षम है।

एक संगीत के विद्यार्थी के लिए संस्कारो के साथ–साथ से संगीत का खज़ाना भी देती है। जिस व्यक्ति व विद्यार्थी को ये सभी रचनाएं अधिक से अधिक याद होंगी, उतना ही वो संगीत के क्षेत्र में सक्षम माना जाएगा। यदि वो अध्यापन के क्षेत्र में है, तब भी वह अपने विद्याार्थियों को यह रचनाएं सिखा पाएगा और यदि वह व्यावसायिक रूप से संगीत में एक गायक के रूप में एक मंझीया कलाकार के रूप में अपनी गायिकी का प्रदर्शन करके समाज में अपनी पहचान बना सकता है और जीविकोपार्जन कर सकता है। इसलिए ऐसी रचनाओं का अध्ययन व ऐसी रचनाओं का अभ्यास हमेशा ही लाभकारी सिद्ध होगा। यही इस लघु शोध परियोजना का निष्कर्ष है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- संगीत बोध, परांजपे डॉ॰ शरच्चन्द्र श्रीधर।

  प्रकाशक : मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।

  तृतीय संस्करण : 1996

  मुद्रक : एकेडमी प्रेस दारागंज, इलाहाबाद।

- पाठक पं॰ जगदीश नारायण, संगीत निबन्ध माला, संजय प्रकाशन।

  संशोधित संस्करण – फरवरी 1983

- शारंगदेव प्रथम स्वराध्याय, संगीत रत्नाकर।

- शर्मा इंदू डॉ॰ 'सौरभ' भारतीय फिल्म संगीत में ताल–समन्वय, कनिष्का पब्लिशर्स।

- रंगूनवाला फिरोज भारतीय चलचित्र का इतिहास राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली।

  websites :

1. hindi.webdunia.com
2. hi.m.wikipedia.org
3. https://bhaktigaane.in